Maa Ka Pachhtawa (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 330
Weekly Booklet : 330

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त बनाम

मां का पछतावा

सफ़हात 21

- सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की फ़ज़ीलत 04
- कलिमए त़य्यिबा कब तक नफ़ा देगा 07
- इस्लाम के 8 हिस्से 07
- गुनाह से न रोकना कब गुनाह है 13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

येह मज़्मून किताब ''नेकी की दा'वत'' के सफ़ह़ा 585 ता 601 से लिया गया है।

मां का पछतावा

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : ''**मां का पछतावा**'' पढ़ या सुन ले उस के मां बाप उस से राज़ी हों और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स सुब्ह़ो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी। (الترغیب والترہیب، 1/261، حدیث:29)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़क़ीक़ी मदनी मुन्ने का ख़ौफ़े ख़ुदा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कैसा नाज़ुक दौर आ गया है कि आज अक्सर वालिदैन ''शफ़्क़त नुमा हलाकत'' के ज़रीए अपने हाथों अपनी औलाद को तबाही के गढ़े में झोंक रहे हैं यहां तक कि अगर बच्चा अज़ ख़ुद सुधरना चाहे तब भी उस की राहें मस्दूद (या'नी बन्द) कर दी जाती हैं, इस त़रह़ के वालिदैन गोया ज़बाने ह़ाल से येह ए'लान करते सुनाई दे रहे हैं : ''हम जहन्नम में अकेले क्यूं जाएं अपनी औलाद को भी साथ ले कर जाएंगे (مَعَاذَاللّٰه)।'' एक दौर वोह था कि ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली मां की रह़मत भरी गोद में पलने और इश्क़े मुस्त़फ़ा रखने वाले बाप की शफ़्क़त

के साए में परवान चढ़ने वाले मदनी बच्चे मुआ़शरे पर ऐसे नुक़ूश छोड़ते थे कि उन की दिलरुबा अदाएं आज भी हमारा दिल मोह लेती हैं, चुनान्चे एक चार सालह शहज़ादा सय्यिद ज़ादा सरे बाज़ार ज़ारो क़ित़ार रो रहा था, किसी साहि़ब ने आले रसूल की ख़िदमत के जज़्बे से सरशार हो कर अ़र्ज़ की : शहज़ादे ! क्या बात है ? अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमा दीजिये अभी ह़ाज़िर करता हूं। येह सुन कर शहज़ादे के रोने की आवाज़ और बुलन्द हो गई और कहा : चचाजान ! **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे जहन्नम के ख़ौफ़ से दिल बैठा जा रहा है ! उन साहि़ब ने शफ़्क़त से अ़र्ज़ की : शहज़ादे ! आप बहुत ही कमसिन हैं, अभी से इतना ख़ौफ़ कैसा ! ख़ात़िर जम्अ़ (या'नी इत़्मीनान) रखिये बच्चों को अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा। येह सुन कर शहज़ादे का ख़ौफ़ मज़ीद नुमायां हो गया और रोते हुए बोला : चचाजान ! मैं ने देखा है कि बड़ी लकड़ियां सुलगाने के लिये उन के गिर्द **छपटियां** (या'नी लकड़ी की छीलन और छोटी छोटी **खपच्चियां** वग़ैरा) चुन दी जाती हैं, **छपटियां** जल्दी से आग पकड़ लेती हैं और उन की बदौलत फिर बड़ी लकड़ियां भी जल उठती हैं ! मैं डरता हूं कि अबू जह्ल और अबू लहब जैसे बड़े बड़े काफ़िरों को जहन्नम में जलाने के लिये **छपटियों** की जगह कहीं मुझे आग में न डाल दिया जाए !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! आप जानते हैं वोह चार सालह शहज़ादा कौन था ? वोह कोई और नहीं ! हमारे टूटे दिलों के सहारे और अहले बैते अत़्हार की आंखों के तारे ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम जा'फ़रे सादिक़** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ थे। (انیس الواعظین، ص75بتغیر)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का *तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : **या नूरल्लाह !** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप तो हैं ही नूर बल्कि नूरुन अ़ला नूर (या'नी नूर पर नूर) । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक नस्ल में ता क़ियामत जितने भी बच्चे होंगे या'नी सादाते किराम वोह भी सब के सब नूर हैं। ऐ नूर वाले प्यारे प्यारे आक़ा ! आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सारे का सारा घराना ही नूर, नूर और बस नूर है ।

नूर अन्दर नूर बाहर घर का घर सब नूर है आ गया वोह नूर वाला जिस का सारा नूर है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दीनी मुआ़मले में ह़ौसला शिकनी करने वाली मां का पछतावा

वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को शुरूअ़ ही से नेकियों और सुन्नतों भरा दीनी माह़ौल फ़राहम करें, वरना बुरी सोह़बत की वजह से बिगड़ जाने की सूरत में बाज़ी हाथ से निकल सकती है । सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को इस की बड़ी बहन ने बताया : एक इस्लामी बहन ने अपने बेटे की इस्लाह़ के लिये रो रो कर दुआ़ का कहा है, बेचारी कह रही थी, हाए ! हाए ! मैं ने ख़ुद ही उस को बरबाद किया है, इस को दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में ह़िफ़्ज़ के लिये बिठाते तो बिठा दिया मगर बेचारा जो सुन्नतें वग़ैरा सीख कर आता वोह घर में आ कर बयान कर देता तो हम उस का मज़ाक़ उड़ाते । आख़िरश उस का दिल टूट गया और उस ने **मद्रसतुल मदीना** जाना छोड़ दिया । अब बुरे दोस्तों की सोह़बत में रह कर आवारा हो गया है, ख़ुश क़िस्मती से मुझे दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल मिल गया है अब मैं सख़्त पछता रही हूं, हाए मेरा क्या बनेगा !

صُحْبَتِ صَالِحْ تُرَا صَالِحْ كُنَدْ صُحْبَتِ طَالِحْ تُرَا طَالِحْ كُنَدْ

(या'नी अच्छे की सोह़बत तुझे अच्छा बना देगी, बुरे की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी)

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की फ़ज़ीलत

अपनी औलाद को भी दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाइये और ख़ुद भी हाज़िरी की सआ़दत पाइये, इस त़रह़ के इज्तिमाआ़त की बरकात के भी क्या कहने ! चुनान्चे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : क़ियामत के दिन कुछ ऐसे लोग होंगे जो न अम्बिया होंगे न शुहदा, (मगर) उन के चेहरों का नूर देखने वालों की निगाहों को ख़ीरा (या'नी चकाचौंद) करता होगा। अम्बिया व शुहदा उन के मक़ाम और क़ुर्बे इलाही को देख कर इज़्हारे मसर्रत फ़रमाएंगे। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन (ख़ुश नसीब) होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : येह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और बस्तियों के लोग होंगे जो (दुन्या में) **अल्लाह** पाक की याद करने के लिये इकठ्ठे होते थे और पाकीज़ा बातें इस त़रह़ चुनते थे जिस त़रह़ खजूर खाने वाला बेहतरीन खजूरें चुनता है। (الترغیب والترہیب، 2/252، حدیث:2334)

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया दीनी माह़ौल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा दीनी माह़ौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ाफ़िल नौ जवान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! ख़ौफ़े ख़ुदा से दिल को लरज़ाने, इश्क़े मुस्त़फ़ा में रूह़ को तड़पाने, गुनाहों की आ़दतें मिटाने, नेकियों का जज़्बा बढ़ाने और अपने आप को सुन्नतों का पैकर बनाने के लिये दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता रहते हुए हर माह कम अज़ कम तीन

दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और नेक आ'माल पर अ़मल करते हुए ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये । आइये ! आप का जज़्बा बढ़ाने के लिये एक "मदनी बहार" सुनाऊं, चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने दावते इस्लामी के पाकीज़ा और महके महके दीनी माह़ौल से इक्तिसाबे फ़ैज़ से क़ब्ल जवानी के नशे में मस्त आवारा दोस्तों की सोह़बत में अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात बरबाद कर रहे थे, मुआ़शरे में पाया जाने वाला कौन सा ऐसा गुनाह था कि जिस के अन्दर वोह मुब्तला न हो, लड़कियों का पीछा करना, उन पर आवाज़े कसना, रात कलब में और दिन ताश व बिलयर्ड (स्नोकर की क़िस्म का एक खेल) खेलने में बरबाद कर देना, घर वालों के समझाने पर ज़बान दराज़ी करना उस की आ़दात बन चुकी थीं । ज़िन्दगी यूं ही गुनाहों भरी ग़फ़्लत में गुज़र रही थी कि ख़ुश क़िस्मती से एक आ़शिक़े रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से उन्हें दावते इस्लामी का महका महका मुश्कबार दीनी माह़ोल मुयस्सर आ गया । आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत से इन्हें नेकियों पर अ़मल करने और गुनाहों से दूर रहने का जज़्बा मिल गया, اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक सजा ली और सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया दीनी कामों का शौक़ मिला और दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के दीनी रसाइल गली कूचों और घर घर जा कर तक़सीम करने का भी ज़ेह्न बना ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इस मदनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने "इन्फ़िरादी कोशिश"

की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! गुनाहों में बद मस्त रहने वाला ग़ाफ़िल नौ जवान इश्क़े रसूल में मस्त हो गया । हमें भी हर एक पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहना चाहिये, कोई हमारी बात माने या न माने हमारा समझाने का सवाब कहीं नहीं जाता ! हमारी इन्फ़िरादी कोशिश की वजह से अगर कोई राहे रास्त पर आ गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه हमारा भी बेड़ा पार हो जाएगा । बुरी सोह़बत से हमेशा दूर रहना चाहिये कि इस की वजह से आदमी बिगड़ जाता और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में पड़ जाता है जब कि अच्छी सोह़बत निहायत अच्छा फल लाती है चुनान्चे दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''अच्छे माह़ोल की बरकतें'' सफ़ह़ा 18 ता 19 पर है : एक ह़दीस शरीफ़ में है, ह़ज़रते अबू रज़ीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि उन से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की अस्ल पर रहबरी न करूं जिस से तुम दुन्या व आख़िरत की भलाई पा लो (पस वोह अस्ल चीज़ येह है कि) तुम ज़िक्र करने वालों की मजलिस इख़्तियार करो ।

(شعب الایمان، 6/492، حدیث:9024)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि (ज़िक्र करने वालों की) मजलिस से मुराद उ़लमाए दीन व औलियाए कामिलीन, सालिह़ीन व वासिलीन (या'नी **अल्लाह** पाक के मुक़र्रब बन्दों) की मजलिसें हैं, क्यूं कि येह मजलिसें जन्नत के बाग़ात हैं जैसा कि दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है । येह मजलिसें ख़्वाह मद्रसे हों या दर्से क़ुरआनो ह़दीस की मजलिसें या ह़ज़राते सूफ़ियाए किराम की मह़फ़िलें । येह फ़रमान बहुत जामेअ़ है । जिस मजलिस में **अल्लाह** का ख़ौफ़, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इश्क़ और इत़ाअ़ते रसूल

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शौक़ पैदा हो वोह मजलिस इक्सीर (या'नी मुफ़ीद तरीन) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/603 ता 604)

संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰہ तुम अपनाए रखखो सदा दीनी माह़ौल
बहुत सख़्त पछताओगे याद रखखो न अ़त्तार तुम छोड़ना दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

कलिमए त़य्यिबा नफ़्अ़ देगा जब तक.....

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''(لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ)'' हमेशा अपने कहने वालों को नफ़्अ़ पहुंचाता रहेगा और उन से अ़ज़ाब को दूर करता रहेगा जब तक इस का ह़क़ हलका न जानें। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कलिमए त़य्यिबा के ह़क़ को हलका जानना क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : یَظْھَرُ الْعَمَلُ بِمَعَاصِی اللّٰہِ فَلَا یُنْکَرُ وَلَا یُغَیَّرُ। या'नी (''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ'' के ह़क़ को हलका जानना येह है कि) **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी वाला काम होता देख कर न उसे रोका जाए और न ही उसे तब्दील किया जाए। (الترغیب والترہیب، 3/184، حدیث:3538)

इस्लाम के 8 ह़िस्से

ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि इस्लाम के **आठ ह़िस्से** हैं ﴾1﴿ इस्लाम ﴾2﴿ नमाज़ ﴾3﴿ ज़कात ﴾4﴿ रमज़ान का रोज़ा ﴾5﴿ ह़ज्जे बैतुल्लाह ﴾6﴿ नेकी का ह़ुक्म देना ﴾7﴿ बुराई से रोकना और ﴾8﴿ **अल्लाह** पाक की राह में जिहाद करना। और वोह शख़्स काम्याब नहीं जिस का कोई ह़िस्सा न हो। (شعب الایمان، 6/94، حدیث:7585)

दुन्या में भी सज़ा मिलेगी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो क़ौम क़ुदरत के बा वुजूद गुनाह करने वाले को उस से रोकती नहीं, अन्देशा है कि वोह न रोकने वाली क़ौम मरने से पहले दुन्या ही में अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाए। चुनान्चे ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : अगर किसी क़ौम में कोई शख़्स गुनाह का मुरतकिब हो और क़ौम के लोग बा वुजूदे क़ुदरत उसे गुनाह से न रोकें तो **अल्लाह** पाक उन के मरने से पहले उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा। (ابوداؤد، 4/164، حدیث:4339)

आख़िरत में भी सज़ा मिलेगी

इस ह़दीसे पाक के तह़्त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : जिस क़ौम या जमाअ़त में कुछ लोग बुराई के मुरतकिब हों और वोह क़ौम उन को रोकने की त़ाक़त रखने के बा वुजूद न रोकें तो वोह भी अ़ज़ाबे ख़ुदा वन्दी के मुस्तह़िक़ होंगे और येह अ़ज़ाब वोह लोग मरने से पहले दुन्या ही में देख लेंगे। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) फ़रमाते हैं कि बुराई को बदलने में कोताही करना दूसरे जराइम के मुक़ाबले में इस लिह़ाज़ से **मुन्फ़रिद** है कि दूसरे गुनाहों की सज़ा आख़िरत में मिलेगी जब कि इस कोताही की सज़ा दुन्या में भी मिलेगी और आख़िरत का अ़ज़ाब इस के इलावा होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/507)

आप का दिल नहीं लरज़ता !

जन्नत की अबदी व सरमदी ने'मतों के त़लबगार इस्लामी भाइयो ! आप का दिल नहीं लरज़ता ? आप पर ख़ौफ़ त़ारी नहीं हो जाता ? कि **अल्लाह** पाक तो बे नियाज़ है, उसे परवाह ही कब है कि लोग उसे सज्दा

करें ही करें, यक़ीनन अगर सारी की सारी मख़्लूक़ भी उस की बारगाह में झुक जाए, तब भी उस की ज़ात पर किसी का कोई एह़सान नहीं। हमें उस की बे नियाज़ी और ख़ुफ़्या तदबीर से डरना और उस की गिरिफ़्त से पनाह मांगनी चाहिये, आख़िर दुन्या में कब तक गुलछर्रे उड़ाएंगे ! याद रखिये ! एक न एक दिन सब को मरना पड़ेगा, अंधेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा

اَلْمَوتُ بَابٌ كُلُّ نَفْسٍ دَاخِلُها　　اَلْمَوتُ قَدَحٌ كُلُّ نَفْسٍ شَارِبُها

या'नी मौत एक ऐसा दरवाज़ा है जिस में से हर जानदार ने गुज़रना है और मौत एक ऐसा जाम है जिसे हर शख़्स ने पीना है।

जी लगाने की जा नहीं दुन्या　किस को ह़ासिल दवाम होता है

मुर्दे की बे बसी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस वक़्त कैसी बे कसी होगी जब रूह़ जिस्म से जुदा हो चुकी होगी, उस दम किस क़दर बे बसी का आ़लम होगा जब बेश क़ीमत कपड़े बदन से उतारे जा रहे होंगे, ग़स्साल नहला रहा होगा, लठ्ठे का कफ़न पहनाया जा रहा होगा, कैसी ह़सरत की घड़ी होगी जब जनाज़ा उठाया जा रहा होगा, **हाए ! हाए !** वोह दुन्या जिसे संवारने के लिये उ़म्र भर भागदौड़ की थी, जिस की ख़ातिर रातों की नींदें उड़ाई थीं, त़रह़ त़रह़ के ख़त़रे मोल लिये थे, ह़ासिदीन के रुकावटें खड़ी करने के बा वुजूद भी जान लड़ा कर दुन्या का माल कमाते रहे थे, ख़ूब ख़ूब दौलत बढ़ाते रहे थे, जिस मकान को मज़बूत़ ता'मीर किया था फिर उस को त़रह़ त़रह़ के फ़र्नीचर से आरास्ता किया था, वोह सभी कुछ छोड़ कर रुख़्सत होना पड़ रहा होगा। आह ! क़ीमती लिबास खूंटी पर टंगा रह जाएगा, कार हुई तो

गैरेज में खड़ी रह जाएगी, खेलकूद के आलात, ऐशो त़रब के अस्बाब और हर त़रह़ का मालो सामान धरा का धरा रह जाएगा। उस वक़्त मुर्दे की बे बसी इन्तिहा को पहुंचेगी जब उस को रोशनियों से जगमगाती आ़रिज़ी ख़ुशियों से मुस्कुराती दुन्याए ना पाएदार के फ़ानी घर से निकाल कर अंधेरी क़ब्र में मुन्तक़िल करने के लिये उस के नाज़ उठाने वाले उस को कन्धों पर लाद कर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ेंगे।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या चन्द लम्ह़ों का ख़्वाब है दुन्या

फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

क़ब्र की दिल हिला देने वाली नेकी की दा'वत

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक क़ब्र के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ? फ़रमाया : अभी अभी एक क़ब्र ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली : ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी : जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं। क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा : येह भी बता। तो कहने लगी : "हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।" इतना कहने के बा'द ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हिचकियां ले कर रोने लगे, जब कुछ

इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इ़ब्रत के ''मदनी फूल'' लुटाने लगे : **ऐ इस्लामी भाइयो !** इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में साहिबे इक़्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार होगा, जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूं कि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले ? कहां गए **बैतुल्लाह** का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे रमज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम किया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या बरताव हुवा ? **अल्लाह** पाक की क़सम ! जो (बे अ़मल) दुन्या में आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की औलाद गलियों में दर बदर है क्यूं कि उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के फिर से घर बसा लिये, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानात पर क़ब्ज़ा कर लिया और मीरास आपस में बांट ली। वल्लाह ! उन में बा'ज़ ख़ुश नसीब भी हैं जो कि क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं जब कि बा'ज़ ऐसे हैं जो अ़ज़ाबे क़ब्र में गरिफ़्तार हैं।

अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस, ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने बाप की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है तो किसी को क़ब्र के तंग व तारीक गढ़े में दफ़्ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है)

काश ! मुझे इल्म होता कि कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले सड़ेगा फिर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए। (الروض الفائق، ص107)

ह़ज़रते अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "एह़याउल उ़लूम" में नक़्ल फ़रमाते हैं : ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़बान पर येह आयते करीमा जारी थी :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ۝۸۳

(پ20، القصص:83)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में **तकब्बुर** नहीं चाहते और न फ़साद, और आ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।

(احیاء العلوم، 5/230)

याद रख हर आन आख़िर मौत है — बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी — आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से — ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है — सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इल्मी तुझे समझा चुके — मान या मत मान आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इ़ज़्ज़त वाले ज़लील कर दिये जाते हैं

ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : किसी क़ौम में मुअ़ज़्ज़ज़ीन या'नी इ़ज़्ज़त वाले लोग ऐसी बुराई को न रोकें जिसे रोकने पर वोह क़ुदरत रखते हों तो **अल्लाह** पाक उन को ज़लील कर देता है।

(تنبیہ المغترین، ص236)

कटे हुए कानों वाला बहरा

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो कोई सुने कि फ़ुलां शख़्स फ़े'ले बद (या'नी गुनाह) का मुरतकिब हुवा और फिर (बा वुजूदे क़ुदरत) वोह उस गुनाह करने वाले को न रोके तो क़ियामत के रोज़ वोह कटे हुए कानों वाला बहरा होगा। (تنبیہ المغترین، ص236)

गुनाह से न रोकना कब गुनाह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा दोनों रिवायतों पर बार बार ग़ौर कीजिये ! गुनाह करने वाले को बा वुजूदे क़ुदरत गुनाह से बाज़ न रखने वाले के लिये ज़िल्लत और क़ियामत में "कान कटे हुए बहरे" की सूरत में उठाए जाने की वईद है, येह मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जब कोई गुनाह कर रहा हो और देखने वाले का ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं मन्अ़ करूंगा तो बाज़ आ जाएगा तो अब मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा अगर मन्अ़ नहीं करेगा तो गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। आदमी को तक़रीबन रोज़ाना ही ऐसे मवाक़ेअ़ पेश आते हैं कि बा'ज़ लोग ला इ़ल्मी की वजह से या ब सबबे ग़फ़्लत "गुनाहे बे लज़्ज़त" कर रहे होते हैं अब अगर ग़ौर किया जाए तो बारहा ऐसा ज़ेह्न बनता है कि फ़ुलां को समझाऊंगा तो मान जाएगा। मगर आदमी सुस्ती या शर्म व मुरव्वत की वजह से मन्अ़ करने से बाज़ रहता और यूं गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हो जाता है। मेरा अपना तजरिबा है कि ना जाइज़ अंगूठी पहनने वालों, गले में धात (METAL) की ज़न्जीर (CHAIN) लटकाने वालों वग़ैरा को जब समझाया है तो अक्सर हाथों हाथ उतार देते हैं, बा'ज़ों को तो जोश में आ कर सोने की ज़न्जीर तक तोड़ डालते देखा है ! ठीक है हर एक ऐसा नहीं करता और हर

एक का दूसरों पर इतना असर भी नहीं होता मगर जो बा असर शख़्सिय्यत हो उस के लिये इस त़रह़ के गुनाहों से मन्अ़ करना मुश्किल नहीं होता और गुनाह करने वाले के मान जाने के ज़न्ने ग़ालिब होने की सूरत में तो मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा।

सोने की अंगूठी मर्द को ह़राम है

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस त़रह़ के मुआ़मलात में बहुत मुतह़र्रिक (ACTIVE) थे चुनान्चे "मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत" सफ़ह़ा 146 पर रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले से नक़्ल है : उन (या'नी सरकारे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द) के लिये सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देह वोह मन्ज़र होता था जब वोह किसी मुसल्मान को इस्लामी शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुए पाते थे। اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) का **फ़र्ज़** अदा करते वक़्त वोह छोटे बड़े, अमीर व ग़रीब और ह़ाकिम व मह़्कूम के दरमियान कोई इम्तियाज़ नहीं करते थे। उन के दरबार का आ़म मा'मूल था कि कोई बड़े से बड़ा रईस हो या ऊंचे से ऊंचे मन्सब का अफ़्सर, उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते वक़्त अगर उस की उंगली में सोने की अंगूठी होती तो वोह फ़ौरन उतरवा देते और निहायत शफ़्क़त और मह़ब्बत के साथ उन्हें तल्क़ीन फ़रमाते कि अज़ रूए शरीअ़ते मुह़म्मदी मर्दों के लिये (कई सूरतों में) सोने का इस्ति'माल ह़राम है। फिर दिल का किश्वर (या'नी दिल का मुल्क) फ़त्ह़ कर लेने वाले लहजे में इर्शाद फ़रमाते : कोई गुनाह लम्ह़े दो लम्ह़े या घन्टे दो घन्टे का होता है लेकिन सोने की अंगूठी का गुनाह ऐसा गुनाह है कि जब

तक पहने रहो मुसल्सल गुनाह ही गुनाह है। (अंगूठी के बारे में तफ़्सीली अह़काम "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा नम्बर 409 ता 412 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

मुफ़्तिये आ'ज़म से हम को प्यार है إِنْ شَآءَاللّٰه *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बन्दर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल वाले

बे नमाज़ियों, गालियां बकने वालों, ग़ीबतों और चुग़्लियों के आ़दियों, फ़िल्में ड्रामे देखने वालों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों की गन्दगियों में लतपत रहने वालों की सोह़बतों में रहने वालों और बा वुजूदे क़ुदरत उन्हें गुनाहों से न रोकने वालों को डर जाना चाहिये कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! मेरी उम्मत में से बा'ज़ लोग अपनी क़ब्रों से **बन्दर और ख़िन्ज़ीर** की शक्ल में उठेंगे, येह वोह लोग होंगे जिन्हों ने गुनाहगारों के साथ तअ़ल्लुक़ात रखे और क़ुदरत रखने के बा वुजूद उन्हें गुनाहों से मन्अ़ न किया। (تفسیر درمنثور، 3/127)

बन्दर और ख़िन्ज़ीर जैसे चेहरे

इसी त़रह़ चेहरा मस्ख़ होने या'नी बिगड़ जाने से **मुतअ़ल्लिक़** एक और रिवायत पढ़िये और कुढ़िये चुनान्चे ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में से बा'ज़ लोग क़ियामत को बन्दर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल में उठेंगे क्यूं कि वोह ना फ़रमानों से मेलजोल रखते हैं और उन को (गुनाहों से) रोकते नहीं ह़ालां कि वोह उन्हें रोकने की क़ुदरत रखते हैं। इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब

शा'रानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं जब ना फ़रमानों से मुख़ालत़त (या'नी मेलजोल) करने वालों का येह ह़ाल हो जो कि ख़ुद ग़ाफ़िल न हों और गुनाहों में मुलव्वस भी न हों तो ख़ुद उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जिन के आ'ज़ा गुनाह से नहीं रुकते ! हम **अल्लाह** पाक से उस की मेहरबानी त़लब करते हैं। (تنبیہ المغترین، ص237)

आज चेहरे के कील मुहासे तो परेशान करें मगर.....

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन दोनों रिवायतों को पढ़ कर क्या आप को कोई तश्वीश नहीं हुई ? सोचिये तो सही ! आज अगर किसी के चेहरे पर कील मुहासे निकल आएं या कोई दाग़ धब्बा पड़ जाए तो वोह डॉक्टरों के पास ख़ूब धक्के खाए या'नी आदमी अपने चेहरे के रंग रूप में मा'मूली सी और वोह भी आ़रिज़ी ख़ामी भी बरदाश्त न कर पाए तो ग़ौर कीजिये कि गुनाह करने वाले को देख कर येह ज़्ने ग़ालिब आ जाने के बा वुजूद कि समझाऊंगा तो मान जाएगा फिर भी उसे उस गुनाह से न रोकने के सबब अगर कल क़ियामत में مَعَاذَاللهِ शक्ल बिगड़ कर बन्दर और सुअर जैसी हो गई तो क्या बनेगा ! येह तो गुनाह से न रोकने वाले हमसोह़बत का ह़ाल है और जो बज़ाते ख़ुद गुनाह करता है उस का अपना तो न जाने क्या अन्जाम होगा !

मेरी तारीक राहें रोशन हो गई

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! जन्नतुल फ़िरदौस पाने और दूसरों को भी इस राह पर लगाने, अ़ज़ाबे जहन्नम से अपने आप को बचाने और दूसरों को भी इस का ख़ौफ़ दिलाने के लिये नेकी की दा'वत के दीनी काम में हर दम लगे रहिये। रोज़ाना जाएज़ा के ज़रीए ख़ुद भी नेक आ'माल का

रिसाला पुर कीजिये और दूसरों को भी इस की रग़बत दिलाइये, ख़ुद भी हर माह कम अज़ कम तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये और दूसरों को भी इस की दा'वत दीजिये। आप की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं : एक इस्लामी भाई दावते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने से क़ब्ल गुनाहों के अमीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में धंसते चले जा रहे थे। फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना और फ़ोहश नाविलें पढ़ना उन के मा'मूलाते ज़िन्दगी में शामिल था। उन के सर पर आवारगी का ऐसा भूत सुवार था कि रात भर घर से बाहर बुरे दोस्तों की सोहबत में ज़िन्दगी के नादिर लम्हात बरबाद करता रहता, उन्हों ने अपनी इन हरकतों से घर वालों की नाक में दम कर रखा था। दावते इस्लामी के दीनी माहौल से मुन्सलिक इन के बड़े भाईजान हर चन्द इन की इस्लाह की सअ़ी (या'नी कोशिश) फ़रमाते मगर उन की नसीहत आमोज़ बातों पर अमल करना दर कनार वोह सिरे से उन की बातें सुनने को ही तय्यार न होते। भाईजान मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ कोशिश करते रहे। आख़िरे कार उन की कुढ़न रंग ले ही आई। एक रोज़ बे साख़्ता उन की तवज्जोह उन के मीठे बोल की जानिब मब्ज़ूल (या'नी मुतवज्जेह) होने लगी, ख़ौफ़े ख़ुदा में डूबी हुई उन की बातें सुन कर जज़्बाते तअस्सुर से वोह रोने लगे। اَلْحَمْدُلِلّٰه इन की आंखों से ग़फ़लत का पर्दा हट गया और ख़ौफ़े ख़ुदा उन के दिल में घर कर गया। उन्हों ने हाथों हाथ अपने भाई के सामने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा की और इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का अहद कर लिया, **अल्लाह** पाक की रहमत से भाईजान की हमराही में दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआदत हासिल होने लगी,

और इस की बरकत से मेरी ज़िन्दगी की तारीक राहें रोशन से रोशन तर होती चली गईं। भाईजान ने सुन्नतों सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का ज़ेहन दिया तो उन की इस ख़्वाहिश को अ़मली जामा पहनाते हुए ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُلِلّٰه वोह यक मुश्त छब्बीस माह के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर हूं। येह सब एक मुबल्लिगे़ दावते इस्लामी या'नी उन के प्यारे प्यारे भाईजान की मुस्तक़िल मिज़ाजी से की जाने वाली इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा है कि दीन से अ़मलन कोसों दूर रहने वाला गुनहगार शख़्स अब अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़े अ़मल है।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा दीनी माह़ौल
नबी की मह़ब्बत में रोने का अन्दाज़ चले आओ सिखलाएगा दीनी माह़ौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने बिल आख़िर बड़े भाई की कुढ़न भरी मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** रंग लाई और छोटा भाई गुनाहों की दलदल से निकल कर 26 माह के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह घर में और बाहर हर जगह दूसरों को नेक बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करता और सवाब कमाता रहे, इस दीनी काम से हरगिज़ न उक्ताए। इन्फ़िरादी कोशिश तो गोया सोने की कान है जितना खोदेंगे उतना सोना निकलता रहेगा या'नी जितनी इन्फ़िरादी कोशिश ज़ियादा होगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा तो बस "सवाब का सोना" इकठ्ठा करते जाइये, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : अगर **अल्लाह** पाक तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता

फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों। (مسلم، ص1311، حدیث:2406) अगर आप के ज़रीए कोई हिदायत पा गया और दीनी माहौल में आ गया तो इस का सवाब मज़ीद बरआं या'नी इस के इलावा। कोई मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया इस का सवाब जुदा और अगर कोई नेक आ'माल का आ़मिल बन गया फिर तो आप के वारे ही नियारे हो गए! बस जितनों की इस्लाह़ का सबब आप बनेंगे उतना ही आप के लिये सवाब में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। बस नेकी की दा'वत देते चले जाइये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِنَّ الدَّالَّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهٖ या'नी बेशक नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है। (ترمذی، 4/305، حدیث:2679)

जन्नती है वोह जिस ने सुन्नत के ख़ुद को सांचे में ढाल रखा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 357)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُهٗ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें ख़ुद नेकियां करते हुए, दूसरों को नेकी की दा'वत देने वाला और गुनाहों से बचते हुए दूसरों को गुनाहों से बचाने वाला बना, या **अल्लाह** हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़त़ा फ़रमा और वहां अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुआ़फ़ फ़ज़्लो करम से हो हर ख़त़ा या रब हो मग़्फ़िरत पए सुल्त़ाने अम्बिया या रब
बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब
नबी का सदक़ा सदा के लिये तू राज़ी हो कभी भी होना न नाराज़ या ख़ुदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला